प्राक्कथन

साहित्य समाज का दर्पण होता है समाज के चित्र प्रस्तुत करने का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम भी यही है जिसका प्रभाव मानव जाति पर अधिक होता है मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है साथ ही उसके समाज के स्तरीकरण को आत्मसात किया है समाज विभिन्न वर्गों के उच्च,मध्य एवं निम्न वर्गों में विभक्त है उच्चवर्ग के अतिरिक्त मध्य एवं निम्नवर्गों का जीवन अधिक संघर्षमयी होता हैं । सामंतवादी युग मे सिर्फ दो वर्ग हुआ करतें थे। किंतु आधुनिक युग के भीषण बदलाव, उद्योग- धंधो, एवं रोजगार के साधनों के विकास से एक और वर्ग का उद्भव हुआ जिसे हम मध्य वर्ग कहतें हैं। मेहरुन्निसा परवेज़ जीने मध्य एवं निम्नवर्गीय महिलाओं पर अपनी व्यापक दृष्टि रखी हैं। उनके साक्षात्कार के दौरान उन्होंने बताया की वे लोग किसी धर्म, भेद-भाव तथा उच-नीच में विश्वास नही करतें। उनके पिता अधिकारी होते हुए भी वे अधिक साधारण लोग के समीप रही हैं। उनका परिवार भी किसी भी तरह के आडम्बरो पर विश्वास नही करता। जो उनके साहित्य में भली-भांति देखने को मिलता हैं।

एम. ए में अभ्यास के दौरान मैंने महिला लेखिकाओं की ढेर सारी कहानी एवं उपन्यास पढ़े थे। मेहरुन्निसा परवेज जी की कहानियों ने मुझे भीतर तक झकझोर दिया था। उनकी कथावस्तु की ओर मेरा चित्र आकर्षित हुआ। मेहरुन्निसा परवेज के कथा साहित्य पर शोध करने की मेरी प्रबल इच्छा जागृत हुई, कथा साहित्य के प्रति मेरा लगाव पहले से ही रहा जिसके कारण ही , मैं उसके कथा साहित्य की ओर आकर्षित हुई। मेहरुन्निसा परवेज का कथा साहित्य में नारी केंद्रित है।

उनके साहित्य में निम्न एवं मध्यवर्गीय नारी जीवन के संदर्भ एक अलग दृष्टि परिलक्षित है। उनके कथा साहित्य के पात्र नसीमा, तहमीना, बूँदाजान, कनी इत्यादि नारी पात्र को पढ़कर ऐसा प्रतीत होता हैं जैसे वे सभी पात्र हमारे आस-पास ही निहित हैं और इसी कारण उनके साहित्य को और अधिक पढ़ने की इच्छा जागृत हुई। इस शोध का उपदेश मेहरुन्निसा परवेज के कथा साहित्य में

स्थापित नारी जीवन है। उनके साहित्य में नारी मध्यवर्ग एवं निम्नवर्ग नारी जीवन के कई पहलुओं तथा आयामों को इस शोध कार्य के द्वारा प्रस्तुत किया है। उनके कथा साहित्य में लेखन कार्य में नारी जीवन के समस्त समस्याओं एवं मुश्किलों को गहनता से जानने परखने का प्रयास किया है।

शोध प्रबंध में विषय-वस्तु का विवरण

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने प्रस्तुत शोध प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है, साथ ही प्रत्येक अध्याय के अंत में संदर्भ सूची प्रस्तुत की गयी है।

प्रथम अध्याय : कथा साहित्य एवं समाज के विभिन्न वर्गों का परिचय

प्रथम अध्याय में मैंने कथा साहित्य का परिचय दिया है। पहले उपन्यास साहित्य के अंतर्गत प्रेमचन्द पूर्व , प्रेमचन्द युग तथा प्रेमचंदोत्तर युग के उपन्यासों का परिचय दिया है। उसके बाद कहानी साहित्य को चित्रित किया है, उसमें प्रारंभिक हिंदी कहानियाँ, प्रेमचन्द युग , प्रेमचंदोत्तर युग तथा नयी कहानी का परिचय दिया है। साथ ही समाज के विभिन्न वर्गों को विस्तार से समझाया है। इसी अध्याय में वर्ग की चर्चा करतें हुए, विभिन्न वर्गों उच्चवर्ग , मध्यवर्ग, निम्नवर्ग का परिचय व्यापक दृष्टि प्रस्तुत किया है।

द्वतीय अध्याय : मेहरुन्निसा परवेज : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

द्वतीव अध्याय में मैंने मेहरुन्निसा परवेज के व्यक्तिव एवं उनके कृतित्व को दिखाया है। उमके कृतित्व के अंतर्गत मैंने लेखिका के जन्म, मेहरुन्निसा परवेज : व्यक्तित्व एवं कृतित्व जन्म तथा नामकरण, माता-पिता, बचपन, शिक्षा, वैवाहिक जीवन, व्यक्तित्व एवं अभिरुचियाँ, लेखन प्रेरणा, सामाजिक कार्य , पुरस्कार एव सम्मान, उल्लेखनीय वृद्धि, सभी धर्मो के प्रति आस्था, सद्गृहणी, समाजसेवी, प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति असीम लगाव, सवतुस्टी के लिए लेखन, पिछड़े वर्गों के प्रति संवेदना, कर्म के प्रति दृढ़ विश्वास, युवा साहित्यकारों को मार्गदर्शन, नारी सम्मान की हिमायती

इत्यादि के बारे में लिखा है। इसके अतिरिक्त मेहरुन्निसा परवेज के साहित्य सृजन की दृष्टि पर भी विशेष रूप से प्रकाश डाला है। इसमे विशेष कर उनके उपन्यास तथा कहानियों पर चर्चा की है, जिसमें उनकी कृतियों के विषय में और उनके समग्र पहलुओं को उजागर किया है।

तृतीय अध्याय : मेहरुन्निसा परवेज़ : कथा साहित्य में मध्यवर्गीय नारी जीवन

रूप से मध्यवर्गीय नारी जीवन की कठिनाइयों को परिपादित किया है। समग्र नारी- जीवन को लेखिका ने बड़ी ही संवेदना तथा सूक्ष्मता से व्यक्त करने का प्रयास किया है। मध्यवर्ग की शिक्षित नारी, ग्रामीण, शहरी, आत्मनिर्भर, आर्थिक दरिद्रता,परित्यक्ता नारी, विधवा नारी की स्थिति, दाम्पत्य जीवन की कड़वाहट, वैश्या नारी की विडम्बना, कुँवारी माँ की समस्या तथा अनमेल विवाह की समस्या, इस प्रकार नारी के हर पहलू का उल्लेख अपने कथा साहित्य में किया है। महिलाओं के विभिन्न सवालों, तकलीफों, दु:ख, संवेदना, छटपटाहट, त्याग, टूटते सपने, टूटती अभिलाषाओं को अपने रचनाओं के माध्यम से स्थापित किया है। उन्होंने न सिर्फ नारी की पीड़ा को दिखाया है बल्कि उनकी मुश्किलों दिखाया है। इसपर भी गंभीरता से विचार किया है। आज नारी शिक्षत तथा सफल होने के बावजूद उन्हें अपने हालातो से समझौता करना पड़ता हैं।

चतुर्थ अध्याय : मेहरून्निसा परवेज़ : कथा साहित्य में निम्नवर्गीय नारी जीवन

आधुनिक युग में निम्नवर्ग का उल्लेख साहित्य में किया जा रहा है। निम्नवर्ग पर होने वाले शोषण का चित्र लेखिका ने अपने कृतियों के माध्यम से किया है। उनके दु:खद परिस्थितियों का चित्रण लेखिका ने समाज के समक्ष रखने का समर्थ प्रयाश किया है।

पंचम अध्याय : मेहरुन्निशा परवेज़ के कथा-साहित्य का शिल्पगत अध्ययन

शिल्प की दृष्टि से मेहरुन्निसा परवेज सफल रही है। उन्होंने अपने साहित्य में प्रभावशाली बनाने के लिए गीतों, ग्रामीण भाषा, अंग्रेजी शब्द, कहावतें-मुहावरों का सफल प्रयोग किया है।

कथावस्तु के अनुरूप शैलियों का प्रयोग बहुत ही सार्थक रूप से किया है। उनके पात्रों में मौलिकता, सहजता, स्वाभाविकता, मनोविज्ञानता, आदि गुण परिलक्षित हुए हैं। देशकाल वातावरण का चित्र लेखिका ने बहुत ही सावधानी पूर्वक किया है उन्होंने प्राकृतिक वातावरण तथा ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र का चित्रण बहुत ही सूक्ष्मदृष्टि के साथ किया है, इसलिए उसमें रोचकता वास्तविकता दिखाई देती हैं। उन्होंने कहावतें, मुहावरे, अंग्रेजी शब्दों, अप शब्दों, ग्रामीण शब्दों, गीतों आदि के प्रयोग से साहित्य में रोचकता तथा सार्थकता उत्पन्न हुई है। वर्णनात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, मनोवैज्ञानिक शैली, पत्रकात्मक शैली, पूर्व दीप्ति शैली, का प्रयोग बहुत ही अनुकूल तथा असरकारक ढंग से प्रस्तुत किया है।लेखिका ने बड़े ही रोचकता के साथ किया है।

उपसंहार

उपसंहार के अंतर्गत मैंने अपने शोध प्रबंध के समग्र अध्यायो का सार निष्कर्ष रूप से दिखाया है और मेहरुन्निसा परवेज़ के कथा साहित्य में मध्यवर्गीय तथा निम्नवर्गीय नारी जीवन को गहनता से समझाने का प्रयास किया है।

संदर्भ-ग्रंथ सूची

आधर ग्रंथ

सहायक ग्रंथ

पत्र पत्रिकाएं

वेबसाइट

यह शोध प्रबंध सभी के आशीर्वाद से पूर्ण कर सकी हूँ ।सर्व प्रथम मैं अपने सम्मानिय शोध निर्देशिका डॉ. मनीषा ठक्कर जी का धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ, शोध के प्रारंभ से लेकर समापन तक जिनका मुझे मार्गदर्शन मिलता रहा। उनके मार्गदर्शन के बिना यह कार्य हो पाना संभव नही था । मैं अपने विभागाध्यक्ष प्रो. कल्पना गवली के प्रति आभार ज्ञापित करती हूँ, और विभाग के आदरणीय प्राध्यापको डॉ. अनिता शुक्ला, प्रो.दक्षा मिस्त्री, डॉ. अजहर डेरिवाला, जिनका आशीर्वाद और मार्गदर्शन मिलता रहा । महाराज सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा के पुस्तकालय और सोशल मीडिया माध्यम का भी आभार करतीं हूँ, जिसके कारण शोध कार्य मे सहायता मिली। मैं अपने मित्रों का धन्यवाद करतीं हूं शिव कैलाश यादव, अंजना मिश्रा, पीनल पडियार, मिथिलेश मिश्रा, ईश्वरभाई इस शोध प्रबंध को पूर्ण करने में जिनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

मैं अपनी माँ इनरावती सरोज एवं पिता श्री रामलावट सरोज के प्रति नतमस्तक हूँ जिनका प्यार, आशीर्वाद ढांढस बढ़ाते रहा। मेरे शोध कार्य में सबसे महत्वपूर्ण सहयोग मेरे जीवन साथी संदीप सरोज और मेरी बेटी आव्या सरोज का रहा है। जिन्होंने ने कदम-कदम पर मुझे प्रेरित किया, आपके सहयोग के बिना विशेष कार्य पूर्ण होना संभव नही था । तत्पश्चात मेरे बड़े भैया जितेंद्र सरोज का धन्यवाद करती हूं जिनका मेरे जीवन में एक विशेष महत्व हैं । छोटे भाई ब्रिजेश सरोज , भाभी अंजली सरोज, काजल सरोज जिनका प्यार, एवं सहयोग सदा रहा है । इन सबके बीच मैं अपने भतीजे सहज सरोज को कैसे भूल सकती हूं जिसका प्यार स्नेह प्रेणना स्रोत रहा है। मेरे ससुराल के सभी लोगों के प्रति नतमस्तक हूँ जिनका आशीर्वाद हमेशा मिलता रहा है।

शोध छात्रा

सरोज सुमन रामलट

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय,

बड़ौदा गुजरात